हेतु त्रय और हेतु की पञ्चरूपोपपन्नता

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

पञ्चावयव-वाक्य के प्रयोग में जिस 'हेतु' का निर्देश किया जाता है वह हेतु, 'अन्वयव्यतिरेकी', 'केवलव्यतिरेकी' ओर 'केवलान्वयी', भेद से तीन प्रकार का होता है। 'हेतु' के तीन प्रकार करने का आधार दो प्रकार की व्याप्ति होती है—(१) अन्वयव्याप्ति और (२) व्यतिरेकव्याप्ति।

वस्तुतः अनुमान का प्राण व्याप्ति है। दो वस्तुओं के अविनाभाव अथवा नियत साहचर्य सम्बन्ध को व्याप्ति कहते हैं अर्थात् जहाँ जहाँ धूम रहता है, वहाँ-वहाँ आग रहती है-इस साहचर्य नियम को व्याप्ति कहते है-"यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निरिति साहचर्यनियमो व्याप्तिः"।

विधिमुखेन जहाँ व्याप्ति की प्रतिपत्ति होती है, उसे अन्वयव्याप्ति कहते हैं। यथा-यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः अर्थात् जहाँ जहाँ धुआँ है, वहाँ वहाँ आग है। जैसे-रसोई घर। यह अन्वय व्याप्ति का उदाहरण है। ठीक इसके विपरीत जहाँ निषेधमुखेन प्रतिपत्ति होती है, उसे व्यतिरेक-व्याप्ति कहते हैं। जैसे-यत्र यत्र वह्न्याभावस्तत्र तत्र धूमाभावः।यथा-महाह्रदः। अर्थात् जहाँ जहाँ आग का अभाव है, वहाँ-वह धुआँ नहीं रहता। जैसे-गहरी झील। यह व्यतिरेकव्याप्ति हुई।

अन्वयव्यतिरेकी-

जिसमें अन्वय और व्यतिरेक दोनों ही व्याप्ति हों, ऐसा हेतु अन्वयव्यतिरेकी है। जैसे कि अग्नि के साध्य में धूम का रहना। 'जहाँ पर धूम है, वहाँ पर अग्नि रहती है', यह अन्वय व्याप्ति है। 'जहाँ अग्नि नहीं है, वहाँ धूम भी नहीं है' यह व्यतिरेक व्याप्ति है। इस तरह यहाँ पर अन्वयव्याप्ति भी घटती है और व्यतिरेकव्याप्ति भी।

केवलान्वयी-

जिसमें केवल अन्वय तो हो किन्तु व्यतिरेक का दृष्टान्त न मिलता हो तो वह केवलान्वयी है। जैसे-

घटोऽभिधेयः –घट अभिधेय है।

प्रमेयत्वात्-प्रमेय होने के कारण।

यत्प्रमेयं तदभिधेयम्-जो जो प्रमेय है, वह अभिधेय भी है।

इस अनुमान में केवल अन्वय का उदाहरण मिलता है। जो अभिधेय नहीं है, वह प्रमेय भी नहीं है। इसमें व्यतिरेक का दृष्टान्त नहीं है। अतः यह केवलान्वयि है।

केवलव्यतिरेकी-

जिसमें केवल व्यतिरेक का दृष्टान्त तो मिलता हो किन्तु अन्वय का दृष्टान्त न मिलता हो, वह केवलव्यतिरेकी है।यथा-

जीवच्छरीरं सात्मकम्-जीवित शरीर में आत्मा है।

प्राणादिमत्वात्-प्राणादि युक्त होने से।

यत्सात्मकं न तत्प्राणादिमत्, यथा घटपटादिः-जो-जो आत्मवान् नहीं है, वह प्राणरहित है। जैसे-घट-पटादि जड़ पदार्थ।

इस अनुमान में केवलव्यतिरेक का उदाहरण मिलता है। जो चैतन्यवान् है, वह आत्मवान् है। इस अन्वय का कोई दृष्टान्त नहीं है क्योंकि सभी चैतन्यकोटि में जाते हैं। अतः अन्वय का दृष्टान्त न मिलने से इसे 'केवलव्यतिरेकी' अनुमान कहते हैं।

अन्वयव्यतिरेकी हेतु में पाँच बातों का होना आवश्यक है जिसका परिचय आगे दिया जा रहा है-

1. **पक्षसत्त्व**-जिसमें साध्य (अग्नि आदि), सन्दिग्ध अवस्था में हो, उसे पक्ष कहते हैं। जैसे-'पर्वतोऽग्निमान्'। इस प्रकार पर्वत पर धूम से अग्नि का अनुमान करने पर 'पर्वत' को 'पक्ष' कहा जाता है क्योंकि अनुमान करने से पूर्व पर्वत पर अग्नि का (साध्य का) होना सन्दिग्ध है। एवं च सन्दिग्धसाध्यवान् होने से 'पर्वत' को 'पक्ष' कहा जाता है और 'धूम' रूप हेतु उस पर्वत पर रहता है। यह प्रथमरूप अर्थात् 'पक्षसत्त्व' उस हेतु (धूम) का समझना चाहिए।

2. **सपक्ष**-जिसमें साध्य (अग्नि आदि) का अस्तित्व निश्चित हो-'निश्चितसाध्यवान् सपक्षः' यह सपक्ष का लक्षण है अर्थात् जिस धर्मी में साध्यात्मक धर्म का निश्चय हो उसे सपक्ष कहते हैं। जैसे-'पर्वतो वह्निमान् धूमात्'-इस प्रकार वह्नि के अनुमान में महानस=रसोईघर 'सपक्ष' है, क्योंकि उसमें वह्नि (साध्य) का अस्तित्व निश्चित है। इस सपक्ष (महानस) में धूम (हेतु) रहता है। यह उसका (हेतु का) 'सपक्षत्व' नाम का दूसरा रूप समझना चाहिए।
3. **विपक्ष**-'निश्चितसाध्याभाववान् विपक्षः'। जिसमें साध्य का अभाव निश्चित हो उसको 'विपक्ष' कहते हैं। जैसे-'पर्वतो वह्निमान् धूमवत्त्वात्'-इस अनुमान में 'महाह्रद', विपक्ष है। क्योंकि 'महाह्रद' (जलाशय) में वह्नि (साध्य) का अभाव निश्चित रहता है। इसीलिए महाह्रद 'विपक्ष' है। उस महाह्रदरूप विपक्ष में धूम (हेतु) भी नहीं रहता है। यह उस धूमवत्त्व (धूम) हेतु का तीसरा रूप 'विपक्षव्यावृत्त्व' समझना चाहिए।
4. **अबाधितविषयत्व**-अर्थात् जिसका विषय (साध्य) बाधित न हो। बाधित विषय का लक्षण यह बताया गया है कि 'प्रमाणान्तरावधृतंसाध्याभावो हेतुर्बाधितविषयः'। जिस हेतु के विषय (साध्य) का अभाव अन्य किसी प्रमाणान्तर (दूसरे प्रबल प्रमाण) से निश्चित होता हो, उस हेतु को 'बाधितविषय' कहते हैं। जैसे कोई अनुमान कर दे कि 'वह्निरनुष्णः कृतकत्वात् घटवत्'-वह्नि, अनुष्ण है (उष्ण नहीं है), कृतक होने से, 'घट' के समान । जैसे 'घट' कृतक (जन्य) है, और अनुष्ण (शीतल) है, उसी प्रकार 'वह्नि' (अग्नि) भी जन्य होने से घट के समान अनुष्ण है। इस अनुमान में 'अग्नि' पक्ष है, उसमें 'अनुष्णत्व' साध्य है और 'कृतकत्व' हेतु है। इस 'कृतकत्व' हेतु का जो साध्य (अनुष्णत्व) है, उसका अभाव (उष्णत्व), वह्नि (अग्नि) में स्पर्श द्वारा 'त्वाचप्रत्यक्ष' प्रमाण से सिद्ध है। इसीलिये 'त्वाचप्रत्यक्ष' रूप जो प्रमाणान्तर है, उससे 'कृतकत्वात्' हेतु का विषय (साध्य) जो 'अनुष्णत्व' है, उसका अभावरूप 'उष्णत्व', अग्नि में पूर्वसिद्ध (पूर्वनिश्चित) होने से यह 'बाधितविषय' नाम का हेत्वाभास है। इसी प्रकार यदि 'पर्वतो वह्निमान् धूमवत्त्वात्' इस वह्निविषयक अनुमान में प्रयुक्त हुए 'धूमवत्त्व' हेतु के साध्यरूप वह्नि का पर्वतरूप पक्ष में किसी अन्य प्रबल प्रमाण से अभाव निश्चित होता तो 'धूमवत्त्व' हेतु को

'बाधितविषय' कहा जाता, किन्तु ऐसा नहीं है। इसीलिये 'धूमवत्त्व' हेतु अबाधितविषय है क्योंकि 'धूमवत्त्व' हेतु का विषय (साध्य) जो 'वह्निमत्त्व' है वह पर्वतरूप पक्ष में किसी प्रमाण से बाधित नहीं हो रहा है। यानी पर्वत पर वह्नि का अभाव किसी प्रमाण से ज्ञात नहीं है। अतः यह 'धूमवत्त्व' हेतु 'अबाधितविषय' है। एवंच 'धूमवत्त्व' हेतु का यह 'अबाधितविषयत्व' नाम का चौथा रूप है ।

5. **असत्प्रतिपक्षत्व**- इसी प्रकार 'धूमवत्त्व' हेतु में पाँचवाँ धर्म, 'असत्प्रतिपक्षत्व' भी है। साध्य के विपरीत अर्थ को सिद्ध करने वाले 'हेतु' को 'प्रतिपक्ष' कहते हैं। जैसे- किसी ने अनुमान किया कि 'शब्दः अनित्यः नित्यधर्मरहितत्वात्'- शब्द, अनित्य है, नित्यधर्म से रहित होने के कारण- यहाँ पर 'अनित्यत्व' साध्य है, इस साध्य के विपरीत है- 'नित्यत्व'। इस 'नित्यत्व' को सिद्ध करने के लिये दूसरा हेतु भी दिया जा सकता है- 'शब्दः, नित्यः, अनित्यधर्मरहितत्वात्'। एवं च दोनों हेतु एक दूसरे के विपरीत अर्थ को सिद्ध करते हैं। ये दोनों हेतु परस्पर एक दूसरे के प्रतिपक्षी हैं। इसीलिये दोनों हेतुओं को 'सत्प्रतिपक्ष' कह सकते हैं। ऐसे सत्प्रतिपक्षित हेतुओं से साध्य का निश्चय नहीं किया जाता है। 'पर्वतो वह्निमान् धूमवत्त्वात्' में धूमवत्त्व हेतु का साध्य जो वह्निमत्त्व है, उसके विपरीत अर्थ को सिद्ध करने वाला कोई दूसरा हेतु नहीं है। अतः धूमवत्त्व हेतु असत्प्रतिपक्ष है। एवं च 'धूमवत्त्व' इस अन्वयव्यतिरेकी हेतु का यह 'असत्प्रतिपक्षत्व' पाँचवाँ रूप है। इस रीति से 'धूमवत्त्व' हेतु, उक्त पाँचों रूपों से उपपन्न (युक्त) है। इस कारण वह अपने वह्निमत्त्व रूप साध्य को निश्चित करने में पूर्णतया समर्थ है, इसलिये वह धूमवत्त्व हेतु शुद्ध हेतु (सद्धेतु) है।